Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN (Online): 3048-6513
Volume: 3 Issue: 3 || February 2026 (Special Issue 1) || DOI: 10.5281/zenodo.18848639

पर्यावरण का बदलता स्वरूप और चुनौतियाँ

डॉ. विट्ठलसिंह रूपसिंह घुनावत[1]

आधुनिकता में पर्यावरण का स्वरूप भी पूरी तरह बदलते जा रहा है| विकास के साथ-साथ पर्यावरण आधारित संघर्ष भी बढ़ते जा रहे हैं, प्रकृति में इतना बदलाव आया है कि एक समय पर हमें तीनों ऋतुओं का अनुभव हो रहा है क्योंकि हम गर्मी की बात करें तो गर्मी में भी हमें सर्दी, बारिश इन दोनों का अनुभव आ रहा है जिसकी वजह से आज पर्यावरण का स्वरूप पूरी तरह बदलते जा रहा है| इसका परिणाम जन सामान्य से लेकर सभी वर्ग पर दिखाई दे रहा है,कहते हैं पहले शुद्ध पर्यावरण था आज तो अशुद्धता की भडमार हो रही है| इसके चलते जैसे नदी,पहाड़, मिट्टी, तालाब, मैदान, पेड़, पौधे, जीव, जंतु, वायु, मिट्टी आदि जो पर्यावरण घटक है| इनपर भी प्रकृति का बहुत बुरा असर पड़ रहा है विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है| अचानक होनेवाले प्रकृति के बदलाव के कारण सभी को परेशानी होती है, यह परेशानियाँ हमारे जीवन की कठिन समस्या बन गई है मानव के चारों ओर फैले हुए वातावरण को पर्यावरण की परिधि माना जाता है| मानव जन्म से मृत्यु तक पर्यावरण में ही रहता है| पर्यावरण या वातावरण वह शक्ति है जो हमें प्रभावित करता है| पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिलकर हुआ है, पर्यावरण उन सब भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समस्त एक इकाई है जो किसी जीवधारी पारितंत्र्य आबादी को को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप जीवन और जाति को तय करते हैं| पर्यावरण वह है जो प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है और हमारे चारों तरफ हमेशा व्याप्त है|

आधुनिकता के नाम पर हम पर्यावरण को हानि पहुंचा रहे, जो कि विकास का नाम देकर हम बड़े-बड़े जंगल काट रहे हैं| इन जंगलों के काटने से पर्यावरण का स्वरूप बदलता जा रहा है, रास्तों के नाम पर हम बड़े-बड़े पहाड़ों को तोड़कर सामग्री निकाल कर हमारे लिए उपयुक्त रास्ते बना रहे किंतु पहाड़ों की हानि के कारण भी हमें बड़ी-बड़ी समस्याओं का निर्माण हो रहा है| डी.डेविस कहते है- "पर्यावरण के अभिप्राय जीव को चारों ओर से घेरे उन सभी भौतिक स्वरूपों से है, जिनमे वह रहता है, जिनका उसकी आदतों उसकी क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है| इस प्रकार के स्वरूपों में भूमि, जल, वायु, मिट्टी प्रकृति वनस्पति, प्राकृतिक संसाधन, खनिज, जल-थल आदि सम्मिलित है|"[1] हमने हमारी सुविधा के लिए सीमेंट के रास्ते बनाए यह रास्ते धूप में बहुत गर्म हो जाते हैं इस वजह से गर्मी ज्यादा बढ़ती नजर आ रही है| पुराने रास्ते छोटे-छोटे थे उनके आजू-बाजू पूरे पेड़ लगाए होते, उन पेड़ों के कारण हमें जितनी गर्मी अब महसूस हो रही है उतनी उस समय नहीं होती थी| हमारी सुविधा के लिए हम प्रकृति के साथ खिलवाड करते हैं किंतु प्रकृति भी समय अनुसार हमारे ऊपर इसका प्रभाव छोड़कर जाती है| डॉ.निशांतसिंह कहते हैं -"जीव जिस माहौल या परिवेश में रहते हैं वह उसका पर्यावरण कहलाता है| जीव और पर्यावरण परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, परस्पर एक दूसरे से प्रभावित होते हैं|"[2] हम कह सकते हैं कि अकाली बारिश के कारण भी इस वर्ष, बहुत सा नुकसान सामान्य जनता को हुआ हैं, कई-कई तो सभी खेती में पूरी तरह पानी भरने की वजह से खेत की जो फसल थी वह खराब हो गई है, कई मिट्टी में तो कहीं पानी में मिल चुकी है| यह जो नुकसान हुआ

[1] सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, जनता शिक्षण प्रसारक मंडल संचालित, महिला कला महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

इसकी वजह से किसान आत्महत्या की ओर बढ़ गया है| पहले हर किसान के पास बहुत सारी खेती थी| उसमें बड़े-बड़े बांध रहते थे जिस पर उन किसानों के जानवरों को खाने के लिए चारा मिलता था| उसपर बहुत सारे पेड़ रहते थे किंतु आज खेती कम हो गई इसकी वजह से ना बड़े बांध रहे ना ज्यादा जानवर सब कुछ कम हो चुका है, बैलों की जगह ट्रैक्टर ने ले ली है| गाय की जगह आधुनिक डेअरी ने ली है| जो हमें केमिकल मिश्रीत दुध, शाही पनीर देती है क्योंकि पहले हर घर दो चार गाय रहती थी उससे उन किसानों को खाने के लिए केमिकल रहित दूध दही पनीर मिलता था| जिसकी वजह से किसान तंदुरुस्त रहते थे| उनको कम बीमारी रहती थी उनके बच्चे ज्यादा बीमार नहीं गिरते क्योंकि उस समय जानवर ज्यादा होने की वजह से उनका सेंद्रीय खाद निकलता उसकी वजह फसल अच्छी आती, वह केमिकल बिना रहती थी| लेकिन आज स्थिति बिल्कुल बदल चुकी है ना जानवर रहे ना सेंद्रीय खाद सब रासायनिक खाद आ गए जिसके कारण हजारों बीमारियां आ गई है जो गेहूं हम बाजार से खरीदते हैं उसमें युरिया की मात्रा बहुत अधिक रहती बिना औषधियों के कोई भी सब्जी बाजार में नहीं आती| एक दिन पहले उसे औषधियाँ मारी जाती दूसरे दिन बाजार में आती क्योंकि उस औषधि की वजह से सब्जी की चमक बढ़ जाती बाजार में उस चमक की वजह से उसका बाजार मूल्य भी अधिक बढ़ जाता है| लेने वाले पैसे देकर उसे लेते हैं किंतु वह पैसे देकर मौत को गले लगाते ऐसा मेरा कहना है| इसकी वजह से कैंसर की बीमारी बहुत हद तक बढ़ चुकी है| इसकी वजह से रोज हजारों लोगों की जान जा रही है, जाती रहेगी तब तक हम इस प्रकृति के साथ खिलवाड़ करते रहेंगे| तब तक ऐसे ही हमें यह सब भुगतना पड़ेगा| जब तक हम कुछ हमारी ओर से कदम नहीं उठाएंगे तब तक यह संभव नहीं| कुछ करने के लिए कब तक रास्ता देखेंगे, हमें कुछ ना कुछ तो कदम उठाना है| हम कहते हैं कि एक व्यक्ति एक पौधा लेकिन अगर ऐसे सब व्यक्तियों ने पौधे लगाए| उनका पालन पोषण किया तो पर्यावरण की समस्या बहुत कम हो सकती है| जिससे सभी घरों में प्राणवायु मिलता रहेगा| यह करने के लिए हमें एक बहुत बड़ा कदम उठाना है, नहीं तो आगे एक दिन ना जाने किस खंडहर में किस वजह से हमारी जान चली जाएगी पता नहीं चलेगा|

पर्यावरण के लिए विविध योजनाएं सरकार की ओर से आती है किंतु वह कहां तक सफल होंगी हम कह नहीं सकते क्योंकि योजना आते-आते अनेकों हिस्सों में बट जाती है| इसलिए उसका पूरी तरह उपयोग नहीं हो पाता है| मैं जब समाचार पत्र पढ़ रहा था उसमें सोलापुर जिले के, 43 गांव पर हरियाली का क्षेत्र, मैंने सामने देखा कि वहां पर आगे मुख्य लाइन थी- "गावामध्ये भरते पर्यावरण शाला; ग्रामस्थकडून देणगीद्वारे वृक्षसंवर्धन|"[3] सोलापुर जिले के किसान प्रमोद इंगले बंजर जमीन पर एक जंगल बढा रहे हैं| यह कहानी माढा तहसील के अजनगांव खिलोबा की है| पौधों को जीवित रखने के लिए इंगले ने पौधों के चारों ओर सुखे गन्ने के टुकड़े फैला रखे थे, इससे जमीन का गीलापन ज्यादा दिन तक रहता है| इस काम में वह अकेले नहीं, गांव के 25 लोगों का समुह इन सब पौधों को बचाने की कोशिश में लगे हुए है| यह एक गांव की कहानी नहीं बल्कि 43 गांव और दो तांडो की कहानी है| जहां 6000 से ज्यादा पौधे लगाए गए और उसका संवर्धन भी किया जा रहा है| यहां के गांव वालों का कहना है कि बढ़ते हुए गर्मी की वजह से चिंता बढ़ रही है कि आने वाले समय में पृथ्वी पर रहना कितना कठिन होगा सोलापुर के इन गांव में आयोजित पर्यावरण पाठशाला में से सभी ग्रामवासी को पढ़ने को मिला| यहां पर पाठशाला में पर्यावरण उसका संरक्षण कैसे किया जाए इसके संदर्भ में छोटी-छोटी जानकारी दी जाने वाली फिल्में दिखाई जाती है| यहां के निवृत्त आर. एस. अधिकारी विपुल वाघमारे कहते हैं कि हम-" लेट्स प्लांट ए ट्री इन द माइंड|"[4] इस घोषणा के साथ लोगों को प्रशिक्षत कर रहे हैं| इस लाइन के अंतर्गत लोगों का एक समुह बनाया जाता है, यह हमें ज्ञान देते, उसके बाद सो पौधों लगाने के लिए गांव वालों का एक समुह तैयार करते, वह गांव वाले हर 10 दिन में घर-घर से

पैसा जमा करते और टैंकर से गर्मी के दिनों मे पौधों को पानी देते| ऐसा हर गांव में चलता है सिर्फ पौधें लगाने को महत्व नहीं बल्कि उसकी देखभाल होना भी जरूरी है, लोग यह सब करते हैं| उनका कहना है हमारे बच्चों का भविष्य अगर सुरक्षित रखना है तो हमें पौधों का निर्माण करना पड़ेगा| वृक्ष रहेंगे तो हमारे बच्चे सुरक्षित रहेंगे यह सच्चाई है, हमें हमारे भविष्य के लिए यह कदम हर एक को उठाना होगा| अगर हम सभी ने मिलकर यह किया तो हमारा भविष्य सुरक्षित रह पायेगा| धुले जिले में भी जंगल सुरक्षा हेतु सुरक्षा रक्षक नियुक्त किए हैं, लोग खुद इसमें शामिल होते है| जिससे पेड़ों की कटाई रुक गई है| यह लोग जंगल के संरक्षण के लिए साल में हर घर से 300 रु जमा करते| उसमें से इन रक्षको को पैसा देते हैं| इससे बेकायदा पेड़ों की कटाई रुक गई|

अंत: हम कह सकते की हमें सुरक्षित पर्यावरण की बहुत जरूरत है| पेड़ पौधे से लेकर पानी, खाने-पीने की चीजों पर पूरी तरह हमें ध्यान देना है, ध्यान देने से ज्यादा हमें इस पर खुद कार्य करना जरूरी है| जब तक हम हमारी सुरक्षा के लिए पर्यावरण के लिए खुद कदम नहीं उठाएंगे तब तक कुछ नहीं हो पायेगा| यह शुरुआत हमें खुद से अपने घर से करनी पड़ेगी| तो यह संभव हो पाएगा, नहीं तो सिर्फ ज्ञान की बातें करते रहेंगे तो यह संभव नहीं| जब हम खुद प्रयोग करेंगे तो हमारे बच्चे देखकर वह भी इस मार्ग पर चलेंगे| ऐसा जब हर घर में होगा तब हमारा हमारे देश का भविष्य सुरक्षित बना रहेगा| हजारों बिमारियों का सामना कर पाएंगे वातावरण बदलाव की वजह से हर मौसम में बच्चे ज्यादा से ज्यादा बीमार रहते, इसलिए पर्यावरणीय बदलाव की, उसकी चुनौतियों को स्वीकार करने की बहुत जरूरत है| जितनी सुरक्षितता हम लेंगे उतना भविष्य में हमें फायदा होगा, जो लोग पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य कर रहे उनको मेरा प्रणाम| मेरा यह लेख पर्यावरण संरक्षण के लिए उठाया गया एक छोटा सा कदम है| इस कदम पर चलकर मेरे दिल में भी बहुत कुछ बदलाव की बातें आई है, यह बदलाव हर व्यक्ति में आये ऐसी हम प्रतिज्ञा करते हैं|

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) पर्यावरण और शोर प्रदूषण- अंजलि –पृ. क्र. 21
2) पर्यावरण और शोर प्रदूषण- अंजलि - पृ. क्र. 23
3) दैनिक दिव्य मराठी - तिथि 9 फरवरी 2026 मुखपृष्ट
4) दैनिक दिव्य मराठी- तिथि 9 फरवरी 2026 मुखपृष्ट

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are solely those of the author(s) and do not necessarily reflect those of the publisher, editors, or the editorial board.*